रंगमहल छठी, सतमी , आठवी भोम – सुखपाल & हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

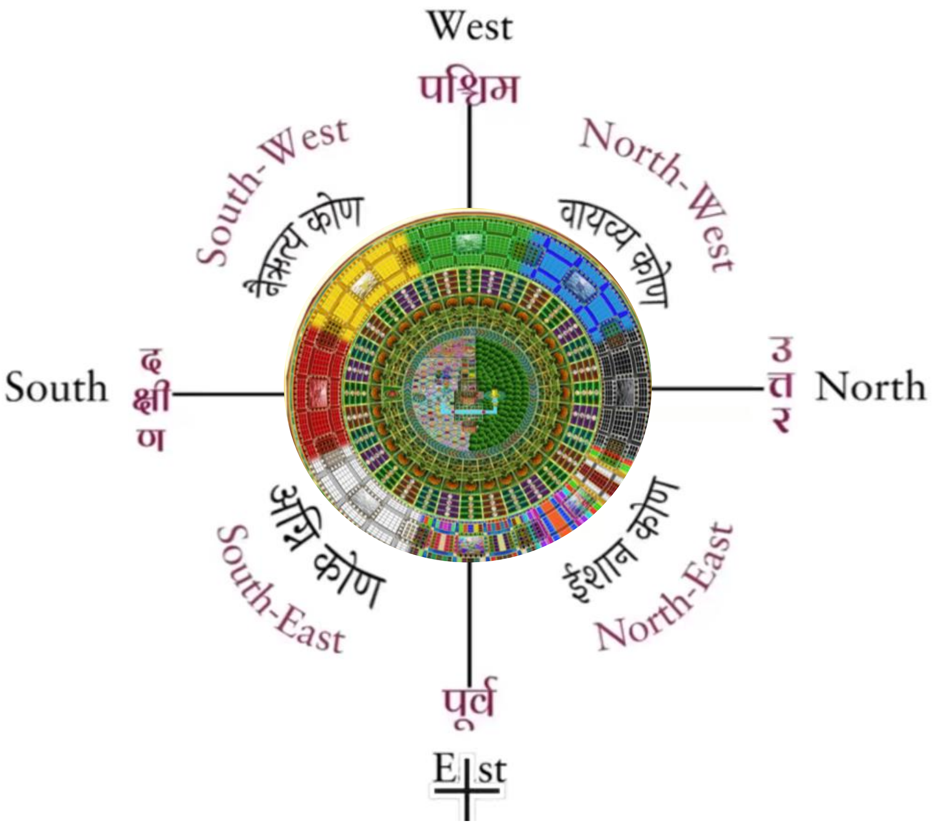

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

जो किन ना देखिया, ना कछु सुनिया कान ।
सो इत मिल्या मोमिनों को, भई सबों पेहेचान ।।२२।।

ए खेल किया इनों वास्ते, भए तीन तकरार ।
अजमाए मोमिनों को, इनों के परवरदिगार ।।२५।।

कुंजी अरस अजीम की, दे इनों को खोल द्वार ।
सेहेरग से देखाए नजीक, अपना नित बिहार ।।२९।।

तुम वास्ते द्वार खोलिया, जो बका भोम चेतन ।
क्यूं न आवत दिन में, देखो अपना ठौर रोशन ।।३५।।

तुम को वतन बोलावने, बंध बांधे हक सुभान ।
तुम तिन को क्यों नहीं देखत, सुकन चीन्हं करो पेहेचान ।।३९।।

महामत कहे ए मोमिनों, यह तुमारा घर श्री धाम ।
अखण्ड बका इन को कहा, जो है दीन इसलाम ।।५७।।

तुम कौन आए इत क्यों कर, है तुमारा कौन वतन ।
तुम को कौन बुलावत, तुमारे जगाये देखावत तन ।।४०।।

रंगमहल छठी भोम – सुखपाल

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

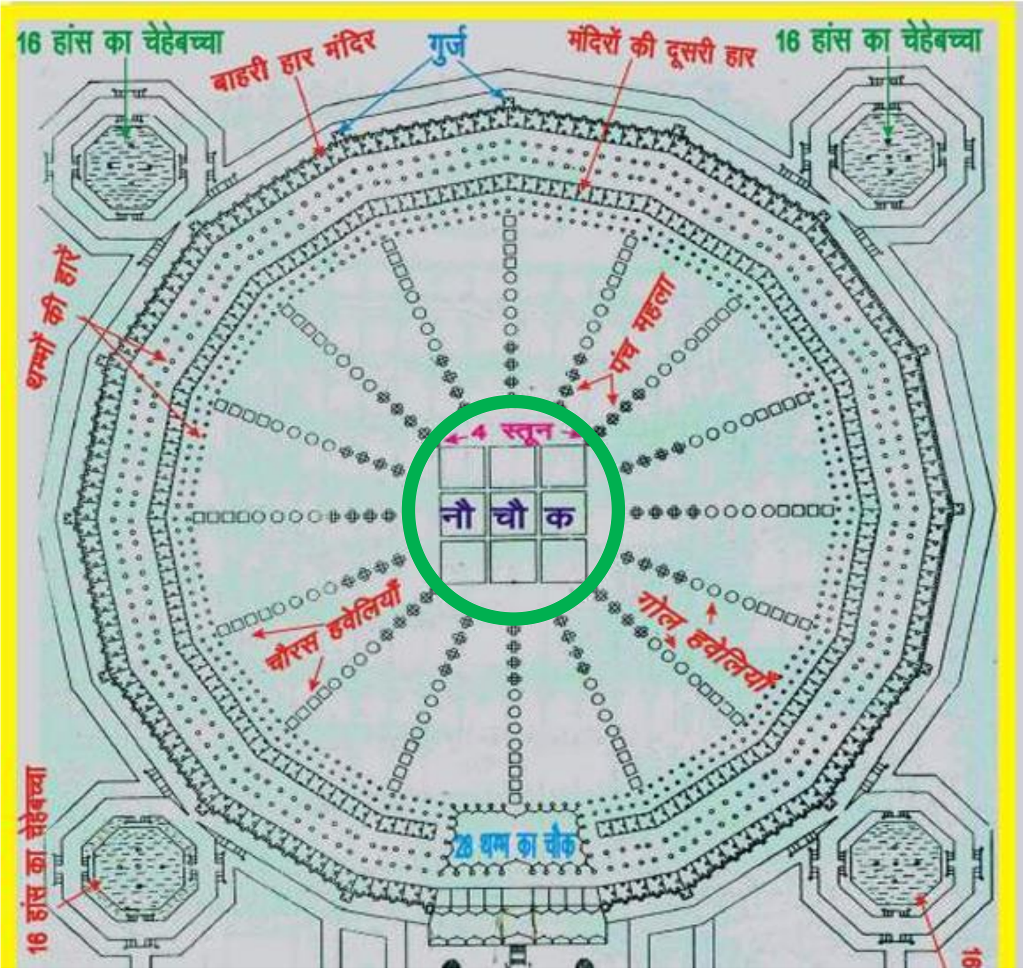

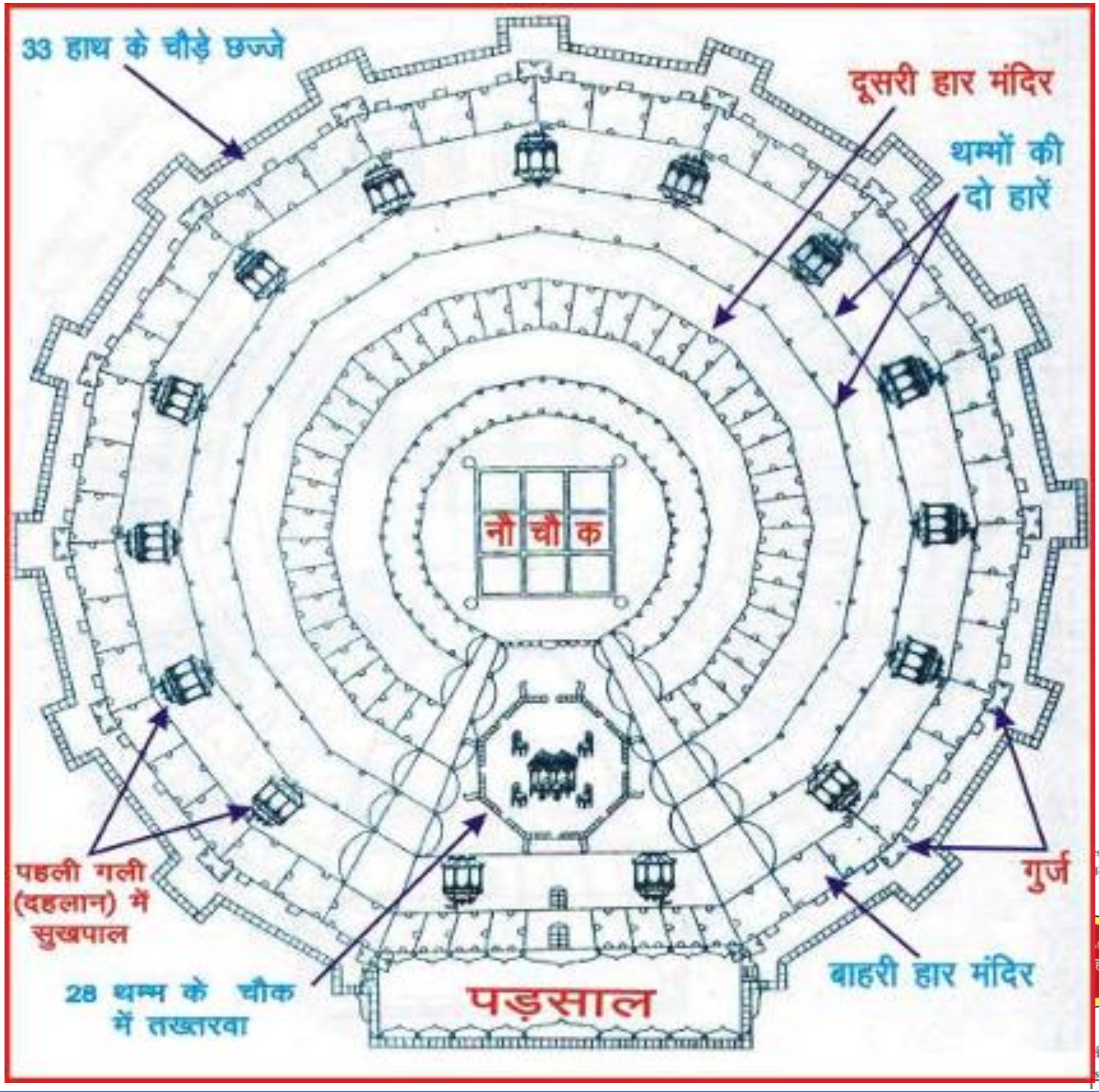

रंगमहल छठी भोम – सुखपाल

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

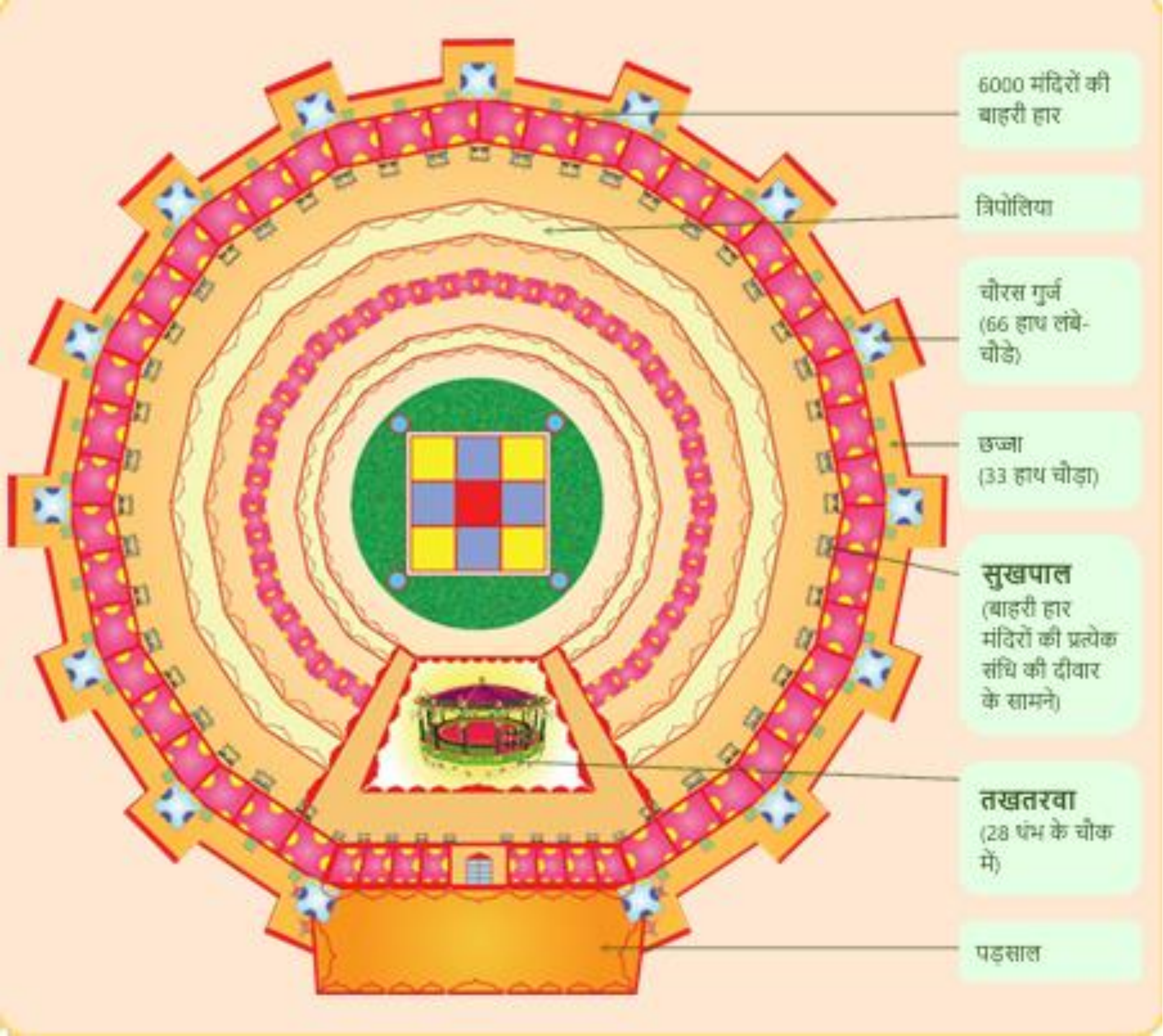

अब कहूं भोम छठी की, गृद मंदिर बारे हजार ।
ए साम सामे दोए हार हैं, रूहें हक सो करें बिहार ।।४३।।

इन भोम में रेहेत हैं, सुखपाल छे हजार ।
तरह तखतरवा की, हक हादी रूहें बैठनहार ।।४५।।

मन वेगी सुखपाल है, जब दिल में चितवे हक ।
हादी रूहों को हाजर, आए पोहोंचे दम माफक ।।४९।।

दिल ऊपर चलत हैं, मन वेगी सुखपाल ।
असवारी समे समे की, सब दिल को करे ख़ुसाल ।।५०।।

क्यूं कहूं शोभा इन समें, जो हक के दिल माफक ।
हक हादी रूहें बन में, नख सिख लों सरूप इशक ।।५१।।

रंगमहल छठी भोम – सुखपाल

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

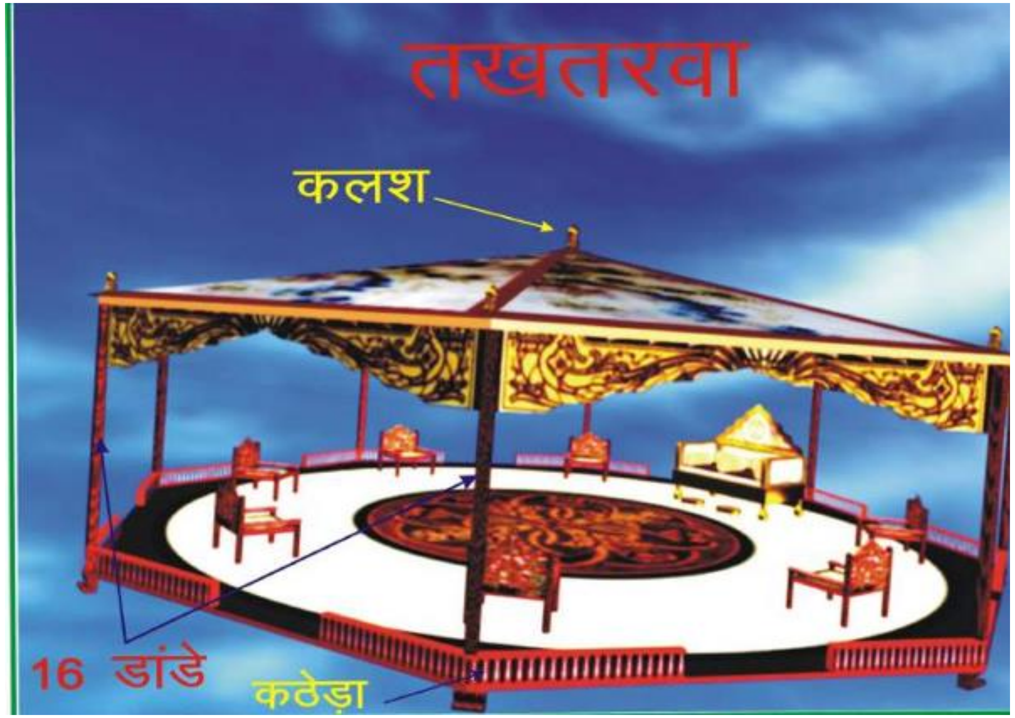

रंगमहल सतमी भोम – दो ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

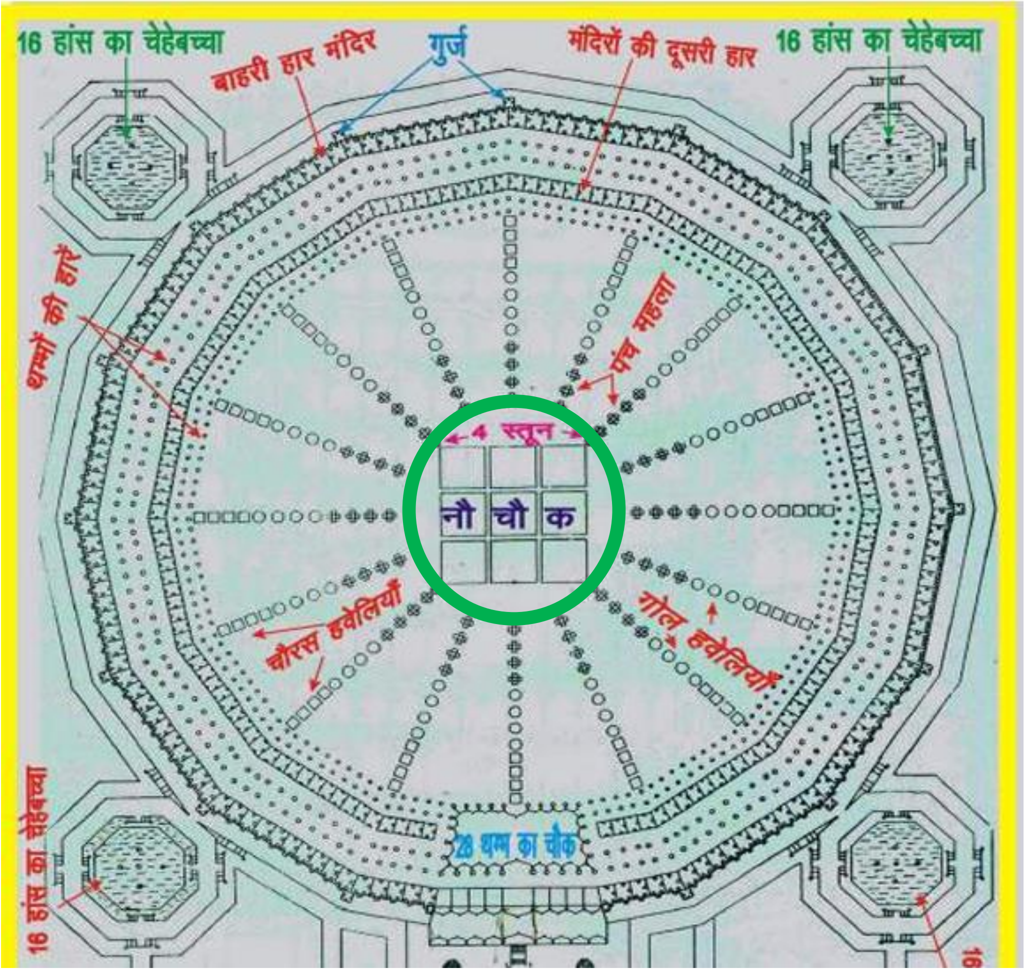

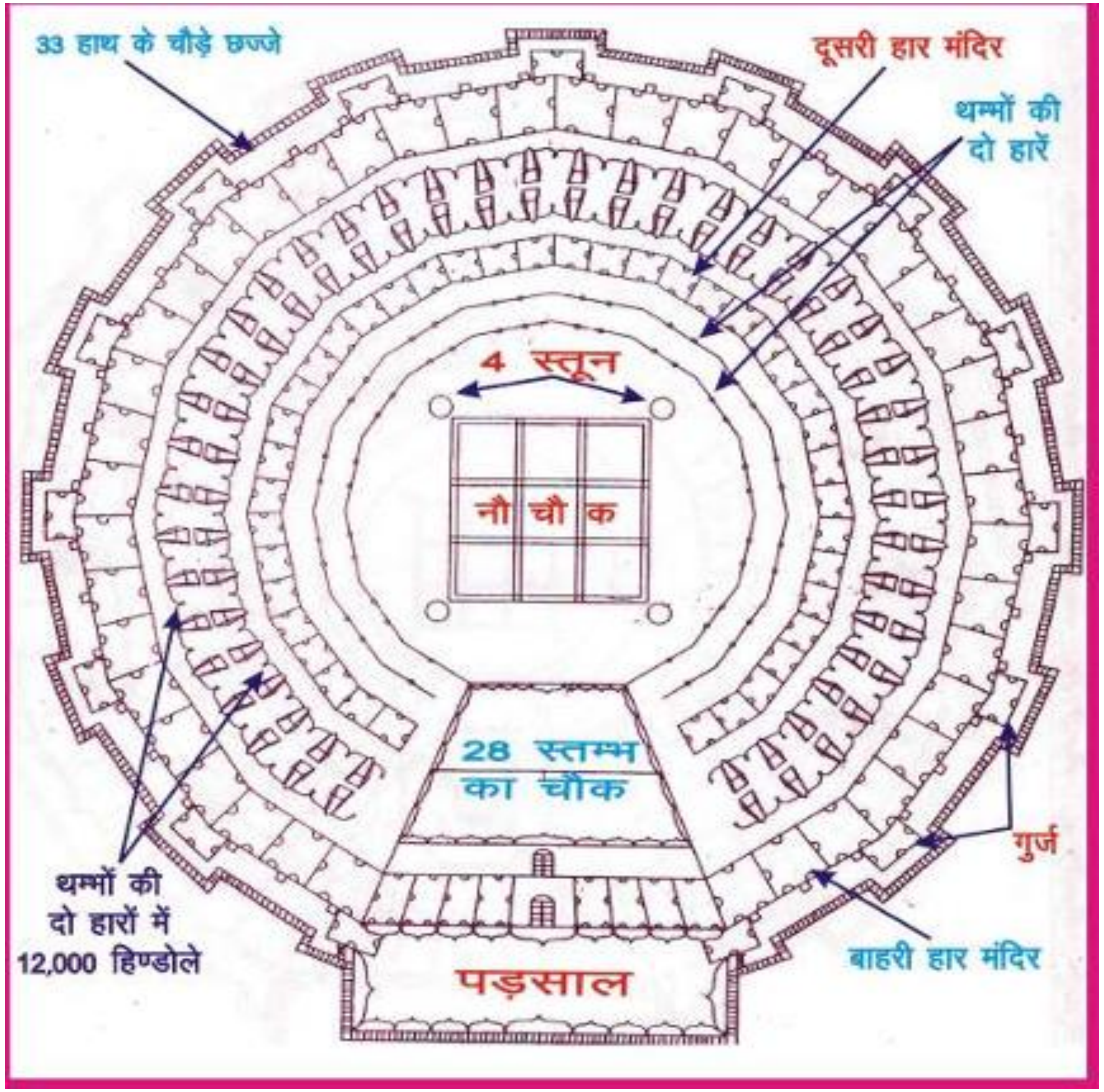

रंगमहल सतमी भोम – दो ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

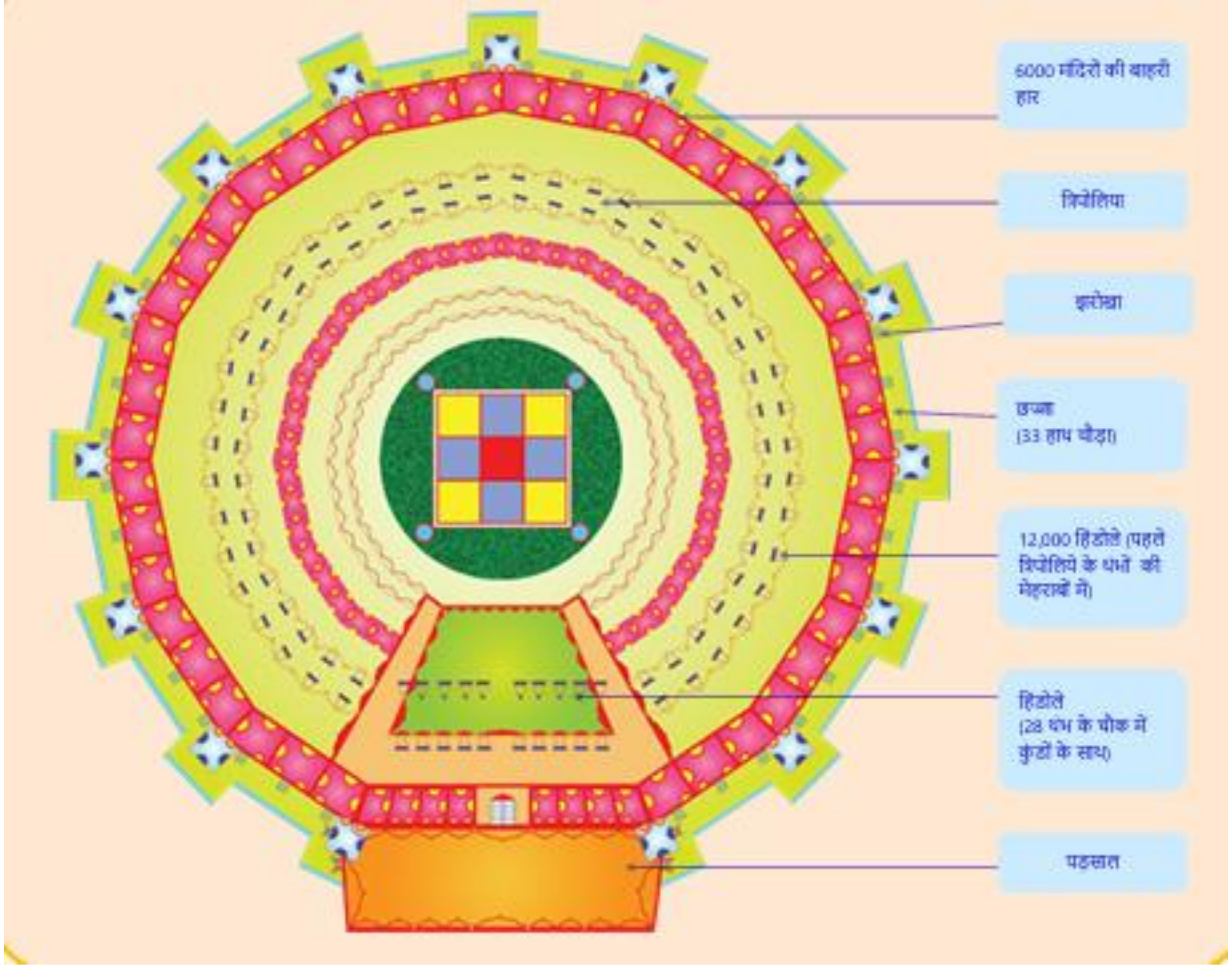

अब कहूं भोम सातमी, जहां हिंडोले छे हजार ।
छप्पर खटों झलकत, संग रूहें परवरदिगार ॥१॥

दोए हार मंदिरन की, दोए हार थम्भ देहेलान ।
तीन गली है तिन की, तहां बारा हजार हिंडोले जान ॥४२॥

ताकी छ हजार गिनती, हिंडोले जो गिरदवाए ।
क्यों कहूं शोभा इनकी, फिरती जो सुखदाए ॥४४॥

हक हादी रूहें हींचत, इन हिंडोलों दरम्यान ।
ए सुख जाने मोमिन, या जाने हक सुभान ॥४७॥

कोई हक सो बातां करे, कोई ठाढ़ी सनमुख ।
कोई नूर जमाल का, देख रही इत मुख ॥४९॥

कोई हंसत हक सों, बातां करे बनाए ।
साम सामी दोए रीझत, ए सुख कह्यो न जाए ॥५०॥

रंगमहल सतमी भोम – दो ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

सुख कहाँ कहूँ भोम सातमीं , जो लेते खटोंछपर ।
हक हादी रूहें झूलत , साम सामी बाँध नजर ।। परि. 19/14

ऐ सुख आनंद अति बड़ो , रंग रस बढ़त अति जोर ।
भूखन हांसी कड़े हिण्डोले, ऐ क्यों कहूँ अर्श सुख सोर।। परि. 31/120

रंगमहल आठवी भोम – चार ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

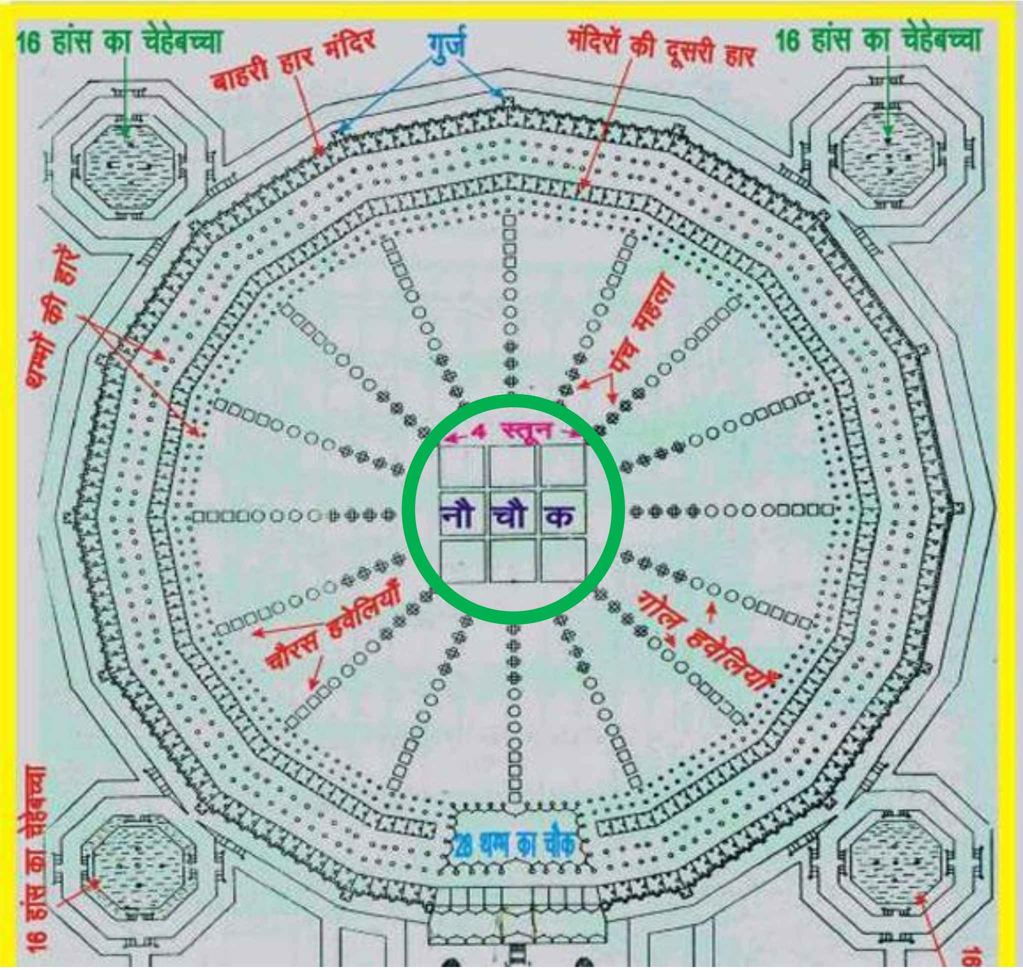

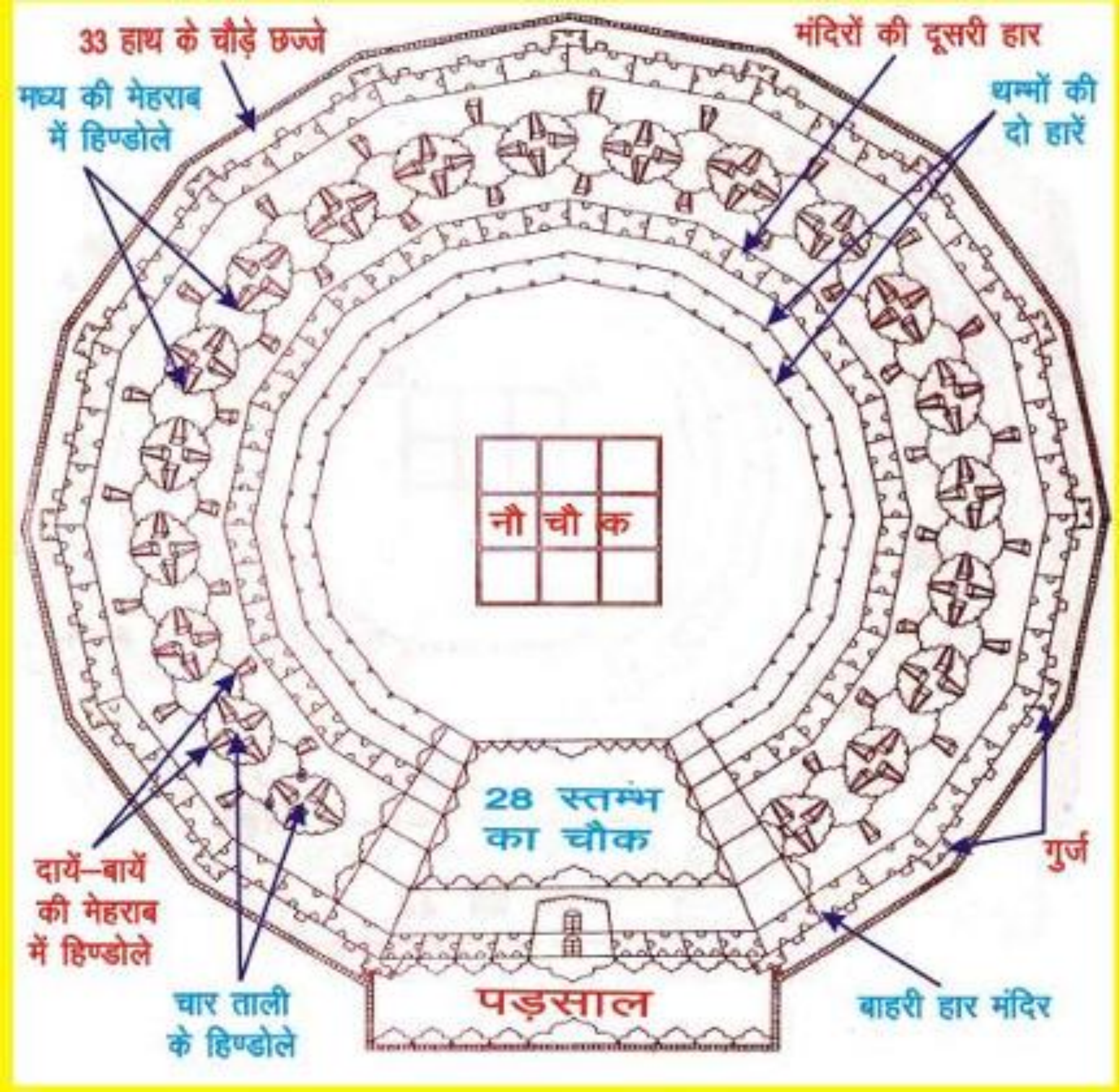

रंगमहल आठवी भोम – चार ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

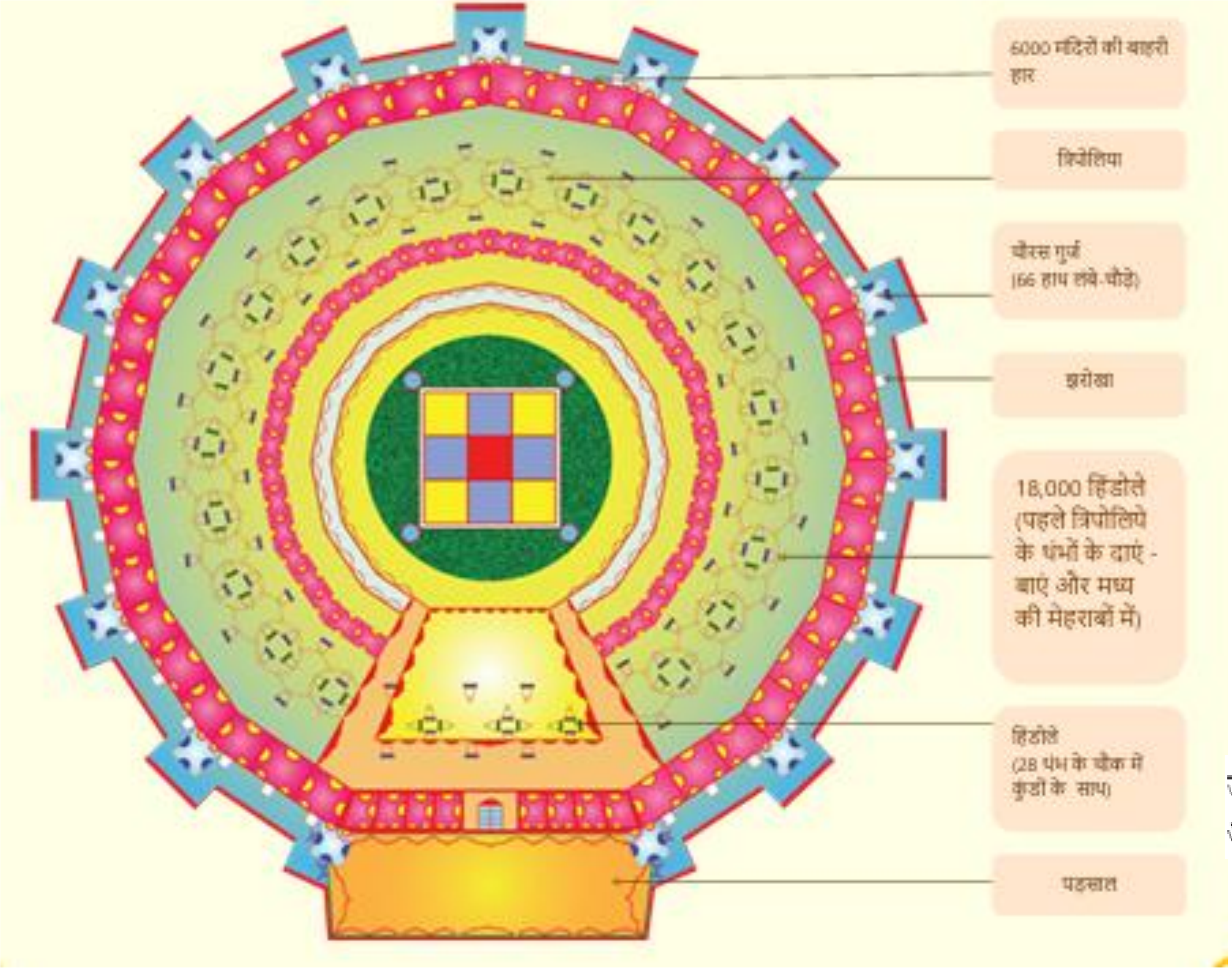

अब कहूं भोम आठमी, अरस अजीम का ठौर ।
इहां पोहोंचे एक मोमिन, कोई सुन न सके और ॥१॥

अब कहूं भोम आठमी, गृद मंदिर बारे हजार ।
जित हक हादी रूहें, हिंडोले करत बिहार ॥४६॥

गृद दोए हार मंदिरन की, जाके साम सामी हैं द्वार ।
ता बीच दो हार थम्भन की, तीनों गली हिंडोलों हार ॥४७॥

इन थम्भ दरम्यान हिंडोले, गिनती छे छे हजार ।
ए मंदिरों आगे थम्भन के, दरम्यान छे हजार हार ॥४८॥

जमा कहूं सबन की, गिनती अठारे हजार ।
हक हादी रूहें हींचत, याकी लेहेरां अति सुखकार ॥४९॥

कहूं बैठ हिंडोले हींचत, छूट जात फेर दूर ।
साम सामी ताली देत हैं, क्यूं कहूं बिलास जहूर ॥५४॥

हिंडोले हींचत अंग में, होत सुख अपार ।
आवत जात लेहेरा उठे, ए सुख मोमिन जाननहार ॥५३॥

उतर हिंडोले जब चले, पाउं भूखन करत ठमकार ।
अंग उमंग बिहार रस, कह्यो न जाए एह बिहार ॥५७॥

रंगमहल आठवी भोम – चार ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

सुख हिण्डोले भोम आठमीं , हक हादी रूहें हींचत।
ऐ चारों तरफ के झूलने , हक हमको देत लज्जत ।। परि. 37/94

रंगमहल आठवी भोम – चार ताली के हिंडोले

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=v89tBZb6aEc

गिरदवाए नूर हिण्डोले , झलकत नूर जंजीर ।
क्यों कहूँ झूलें नूर के , रूहें हँसत मुख नूर नीर ।। परि. 37 / 94

OR